261 P
899
H
Mikrofilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 899
1295/10/21

V
20/1

891.431
LISva

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
13 NOV. 1929

ईश्वर सदैव रक्षक

व्यग्र बम् गोले

आरत भारत हो रहा, पूर्णरूप परतन्त्र।
घर घर में रम जायगा, 'काकोरी षणयन्त्र' ॥

लेखक-तथा प्रकाशक

पाण्डेय हीरालाल 'व्यग्र'
G. M. T. M. C.

द्वितीय बार
२००० प्रति

जौलाई १९२९

मूल्य
आधआना)॥

899

(ईश्वर सदैव रक्षक ।)

❀ व्यग्र बम् गोले ❀

(ईश्वर उपाशना)

मचादो लाल क्रान्ति भगवान ।
क्रोधमय माया की मुशकान ॥
कष्ट कठिन चहु ओर मचाये सैनिक वृटिश जवान ।
त्राहि त्राहि कर 'व्यग्र' पुकारत भारत दुखित महान ॥
नराधम-न्याय की हांकैं शान ।
कराते जुल्म बने अनजान ॥
डाकू, चोर, लुटेरे, करते नित्य नये उतपात ।
सज्जन पुरुषों पर होते हैं कठिन कुठारा घात ॥
हुआ है सभी नष्ट धन धाम ।
खो गया मान सकल सनमान ॥
शहन शक्ति सब नष्ट हो गई जान हुई बेजान ।
शेखी शान सभी तज दीन्हीं किसपर करै गुमान ॥
सुना दो फिर मुरली की तान ।
मचा दो लाल क्रान्ति भगवान ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 899
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

(फैसनेबिल देवियाँ)

देवी भारत की रमणी कहाया करो।
भेश भुवनेश्वरी का बनाया करो॥
साड़ी विलायती जो मगाती हो चौक से।
फ़ीते, व लैश, उसमें लगाती हो शौक से॥
घर का पैसा न इसमें गवाया करो।
भेश भुवनेश्वरी का बनाया करो॥ देवी०॥ १॥
ओटो, सुगन्ध, तेल तुमहो सर में डालती।
ऐनक, लगाकर शौक अज़ब तुमहो पालती॥
टरकी साबुन, न घरमें मगाया करो।
भेश भुवनेश्वरी का बनाया करो॥ देवी०॥ २॥
हाथों में चटक मटक के जेवर हो पहनती।
कमज़ोर हो रही हो बनो बीर मेहनती॥
'दुलारी' चर्खा भी घर में चलाया करो।
भेश 'भुवनेश्वरी' का बनाया करो॥ देवी०॥ ३॥
बांधो कमर में छूरी कटारी भी शान से।
गुण्डे गरूर नष्ट करो निज कृपान से॥
मिश-मेयो के छक्के छुड़ाया करो।
भेश भुवनेश्वरी का बनाया करो॥ देवी०॥ ४॥
खद्दर तैयार करने को चर्खे भी चलाओ।
घरके बिदेशी सूट-बूट सबको जलाओ
'व्यग्र' चर्खे से बम्ब बरसाया करो।

देवी भारत की रमणी कहाया करो।
भेश भुवनेश्वरी का बनाया करो ॥ देवी० ॥ ५ ॥

(बज़ाजों पर बम्)

बज़ाजो कपड़े स्वदेशी मंगाया करो ।
विदेशी वस्त्रों में अग्नी लगाया करो ॥
कपड़ा विलायतों से न हरगिज़ मगाओ तुम ।
भारत की बनी खादी स्वदेशी रंगाओ तुम ॥
खद्दर बेचो, और पहिनों, पहिनाया करो ।
बज़ाजो कपड़े स्वदेशी मंगाया करो ॥ विदेशी० ॥ १ ॥
लंदन की बनी मखमलें, अन्डी, व लंकलाट ।
शाटन, गिरन्ट, डोरिये, का कर दो बायकाट ॥
बढ़िया कपड़ों में दिल न लगाया करो ।
बज़ाजो कपड़े स्वदेशी मंगाया करो ॥ विदेशी० ॥ २ ॥
शादी, निकाह, व्याह, में पहिने जो विदेशी ।
उन देश शत्रुओं से कहो पहिनों स्वदेशी ॥
भारत बासी न हैट लगाया करो ।
बज़ाजो कपड़े स्वदेशी मंगाया करो ॥ विदेशी० ॥ ३ ॥
है हुक्म कांगरेस सभी चरखे चलावो ।
खद्दर तैयार करके उसके कपड़े बनाओ ॥
चरखा चक्कर से बम् बरसाया करो
बज़ाज़ो कपड़े स्वदेशी मंगाया करो ॥ विदेशी० ॥

कहता है 'व्यग्र' इंडिया की शान बचाओ।
धन बहगया इँगलैन्ड पर अभिमान बचाओ।
कायर बन कर न वक्त गँवाया करो॥
बजाजो कपड़े स्वदेशी मंगाया करो।
बिदेशी वस्त्रों में अग्नी लगाया करो॥

(व्यग्र अभिलाषायें)

धीरे धीरे सर्वनाश की रौरव रचना रच जाये।
आग लगे इस अखिल बिश्व में, धुवां धार फिर मचजाये॥
नाशक शासक शहमें सम्राटों के सिंहासन डोलैं।
हटैं गद्दियां लुटे खज़ाने, चिर बन्दी बन्धन खोलैं॥
अत्याचार भार भू का हो, फैले ऐसी अमिट अशान्ति।
भ्रान्ति दूर हो उथल पुथल हो क्रान्ति क्रान्ति हो भीषण क्रान्ति॥
अस्त्र शस्त्र सब चले निर्बलों पर बर्छी और भाले हों।
ऐसा घमाशान हो बीरों को प्राणों के लाले हों॥
धन सत्ता की मान महत्ता, मिट्टी में मिल कर रोवै।
पश्चाताप करै पापों का पीड़ित राज बंश होवै॥
मचै रक्त की कीच भक्त गण, भ्रम का भेद भाव भूलैं।
नव जवान फांसी के तख्तों पर सादर, हँस हँस झूलैं॥
बलिदानों का ढेर देख बलिवेदी ज्वाला, खिल जावे।
हो ऐसी हुँकार द्रोहियों के दल का, दल हिल जावे॥

उड़े पताका साम्यवाद की अवनति का पथ खाली हो।
फूली फलो पल्लवित इस उपवन की डाली डाली हो॥
मिटे अनीति नीति की जय हो दया धर्म का हो संचार।
पर्दा फटे खुल पड़े सहसा बन्द स्वर्ग के सुन्दरद्वार।

('दत्त' अभिलाषा)

भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें फिर से आजा क्रान्ति मचाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें मुरलि बजाजा दुःख नशाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें अब प्रकटा जा प्रेम जगाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें ज्ञानजमाजा गीता के गाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें भार हटाजा गिरवरके उठाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें शान्ति कराजा बिगड़ीके बनाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें धन उपजाजा ओ धेनु चराने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें दृश्य दिखाजा अब रक्त बहाने वाले, भारतमें॥ भारतमें॥
भारतमें चक्र चला जा फिर बम् बरसाने वाले, ॥ भारत में॥
भारतमें फिर से आजा क्रान्ति मंचाने वाले, भारत में॥ भारत में॥

चर्खे के सूत से बने हुये शुद्ध जनेऊ जोड़े तथा पवित्र साबुन,
इत्यादि मिलने का ठिगाना—
पं० हीरालाल पाण्डेय जनरल मर्चेन्ट,
तरकारी मंडी कानपुर।

(अधिक-सुविधा)

व्यापारी महाशयो !

युक्त प्रान्त में जनरल मर्चेन्ट के बहुत भारी व्यापार करने वाले अर्थात् विविधि प्रकार के मोजे, बनियाइन्, तौलिया, रुमाल, बेल, फीते, छाते, लालटेन, तथा अनेक भांति के स्वदेशी, बिलायती साबुन, और बटन, तास, सुई, पेचक, आईना, घड़ी, चैन चिमनिया इत्यादि बिसातखाने (मनिहारी बाने) की समस्त वस्तुयें । और इनके अतिरिक्त कपड़े धोने का साबुन, सोडा, सोडा कास्टिक, बिलायचिंग पावडर, सिलीकेट, आदि आदि रसायनिक पदार्थों की सुविधा दायक साथही सत्यता के साथ व्यवहार करने वाली दूकान तथा आढ़त का एक मात्र—

ठिकाना—

पं० हनुमान प्रसाद मदन मोहन पाण्डेय जनरल मर्चेंट

कमीशन एजेण्ट, एन्ड, म्युनिस्पिल कन्ट्राक्टर,

तरकारी मंडी कानपुर ।

——:o:——

हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स, नीचीबाग, बनारस सिटी ।

(चमकेहीगा)

क्रान्ति की उषा से होगा रक्त भारतीय व्योम।
ताव भरा तेह का तरणि तमके हीगा ॥
भारी राजनीति से उदधि के उबारिबे को।
'व्यग्र' चारुकाल चन्द्रमासा चमके हीगा ॥
वैरियों का दमन, शमन, होगा शक्ति ही से।
युद्ध घोषणा को कोई घर धमके हीगा ॥
कायरो क्यों लेते हो कलंक को अकारथ ही।
भारत के भाग्य का सितारा चमके हीगा ॥

(छाई है)

तीर, तलवार, कड़ाबीन, औ तमंचा, छुरी,।
किरच, छिनाय 'व्यग्र' वीरता दिखाई है ॥
बैठे बिठलाये निर्दोष पकरि लेत सदा।
कायर प्रजाकी जान आफ़त में आई है ॥
सत्य बात कहने पर होत कारागार बास।
गोरे राज शासन की कीरति बड़ाई है ॥
शीघ्र ही स्वराज्य के समर में पधारो वीर।
बोलसेविकों की हवा भारत में छाई है।